दर्शन एवं जीवन प्रबन्धन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय

राजस्थान

हम दर्शन के विद्यार्थी बचपन से पढ़ते आये हैं कि दर्शन को अंग्रेजी में Philosophy यानि Love to wisdom यानि बुद्धि से प्रेम कहते हैं। जो बुद्धि से प्रेम करता है बुद्धिमान है, वह दार्शनिक होता है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान चरम सीमा पर है। विज्ञान गति देता है तथा दर्शन दिशा देता है। अगर विज्ञान की यह गति इसी तरह तेज होती रही और विश्व के समस्त 210 छोटे–मोटे देश भयभीत होकर अपनी सुरक्षा के लिए अणु बंम बनाकर इकट्ठे करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब अणुबम्बों के इस जखीरे के कारण किसी शक्तिशाली राष्ट्र के दिमाग में युद्ध की कल्पना आई तो 7 अरब की जनसंख्या 7 मिनट में स्वाह हो सकती है। हर राष्ट्र अपने बजट का 75–80 प्रतिशत मात्र भय के कारण सुरक्षा पर खर्च कर रहा है। इस कारण पूरे विश्व में जनता का विकास नहीं हो रहा तथा जनता गरीब होती जा रही है। खास तौर से भारत जैसे 135 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में 50 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं।

ऐसे विकट समय में दर्शन को प्रायोगिक होकर मानव जीवन का इस प्रकार से प्रबन्धन करना है कि शांतिपूर्ण सह–अस्तित्त्व से निर्भय होकर 7 अरब की जनसंख्या सुख से जीवन यापन करे। दर्शन का सीधा–साधा अर्थ है–देखना। व्यक्ति खुली आंखों से देखता है और बंद आंखों से भी देखता है। अगर देखने का जीवन प्रबन्धन हो जाय तो

व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' बन सकता है। **देखने की कला है– राग–द्वेष मुक्त होकर देखना।** भीतर और बाहर दोनों तरफ। व्यक्ति को हिंसा, अपराध, आतंकवाद, असमानता, छोटा–बड़ा, गरीब–अमीर एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य की हर बुराई की तरफ ले जाने वाला मात्र एक ही घटक है, वह है – राग–द्वेष। व्यक्ति ने अपनी दोनों आंखों पर चश्मा लगा रखा है, एक आंख राग, की दूसरी आंख द्वेष की। इससे वह किसी वस्तु, व्यक्ति एवं विचारधारा को प्रिय मानता है, किसी को अप्रिय। अंतिम सत्य यह है कि चराचर जगत् का हर जीवित प्राणी अपने कर्मों के अधीन जीता है एवं कर्मों के अधीन मरता है। छोटा से छोटा प्राणी भी मरना नहीं चाहता, कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता। फिर जब हम किसी को जीवन नहीं दे सकते हैं, तो उसका जीवन छीनने का हमें क्या अधिकार है।

दर्शन का कार्य दृष्टि को बदलना है। दृष्टि बदलती है तो सृष्टि बदलती है। दिशा बदलती है तो दशा बदलती है। नजर बदलती है तो नजरिया बदलता है। आज दर्शन को प्रायोगिक होना पड़ेगा। दर्शन में योग्यता है कि वह व्यक्ति एवं विज्ञान को दिशा–बोध दे सकता है। अच्छे जीवन प्रबन्धन के लिए हमें सम्यक् दर्शन, Right Vision, Positive Thinking को प्राप्त करना होगा, वह मात्र दर्शन द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। **दर्शन प्रायोगिक होकर व्यक्ति को राग–द्वेष, प्रियता–अप्रियता, Like- Dislike की दो भौतिक आंखों के साथ–साथ तीसरा शाश्वत, अभौतिक नैत्र दे जिसका नाम है–समता।** व्यक्ति तीसरा नैत्र प्राप्त कर चराचर जगत् के हर जीवित प्राणी को आत्मतुलावत् समझे यानि अपने जैसी ही आत्मा समझे। दर्शन व्यक्ति को परदोष दर्शन के स्थान पर स्वदोष दर्शन की दृष्टि प्रदान करे। व्यक्ति चिन्तन करे कि जो व्यवहार मुझे अच्छा नहीं लगता वह मैं

अपने समान अन्य मनुष्य एवं चौरासी लाख जीवायोनि के किसी प्राणी के साथ नहीं करूँ। **"सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।"** दर्शन का उद्देश्य व्यक्ति को सुधारना है। वह सम्यक् दृष्टि यानि समता के तीसरे नैत्र से ही संभव हैं। हमें 7 अरब की जनसंख्या में समता की जागरूकता लानी होगी। विश्व में शिक्षा जगत् की सर्वोच्च डिग्री Ph.D. में हर विषय के साथ दर्शन को जोड़ा गया है, क्योंकि दर्शन जीवन प्रबन्धन करता है। दर्शन हर शिक्षित व्यक्ति को जीवन जीने की कला, Science of Living, जीवन कौशल, सकारात्मक जीवन पद्धति सीखाता है।

अतः दर्शन को आज Applied Philosophy बनाना है। वह है व्यक्ति को तीसरा नैत्र–समता का प्रदान करना है। सम्पूर्ण प्रकृति वीतराग है, चौरासी लाख जीवायोनि वीतराग है, मानव का अंतिम अस्तित्त्व शुद्ध आत्मा भी बीतराग है। अशुद्धि है व्यक्ति के कार्मण शरीर, लिंग शरीर, Causal body में जिसके कारण उसे यह शरीर, यह जीवन मिलता है। जीवन हरेक को मिलता है। जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है। हर संयोग के साथ वियोग निश्चित है। यह शाश्वत सत्य है। सार्वभौम सत्य है। Univasal Truth है। विश्व में ऐसा कोई बलवान् व्यक्ति नहीं है जो संयोगों को बदल सके। **दर्शन का प्रायोगिक रूप व्यक्ति की सोच को बदलना है।** आज नकारात्मक सोच का बोल–बाला है, उसकी जगह सकारात्मक सोच (Positive Thinking) को लाना है। राग–द्वेष दृष्टि को बदलकर तीसरा नैत्र–समता का खोलना है। यह दर्शन की परिभाषा है, उसका अर्थ है, उसका प्रायोगिक रूप है। अतः हम सभी दर्शन के विद्यार्थियों–दार्शनिकों को स्वयं दर्शन द्वारा अपना तीसरा नैत्र–समता का खोलना है तथा हमें मानव जाति को दर्शन के माध्यम से इसके विविध प्रयोग करवाने हैं। आज विश्व दर्शन द्वारा मार्ग दर्शन प्राप्त करने हेतु आतुर

है। दार्शनिकों की कथनी–करणी में जब कोई अन्तर नहीं रहेगा तो सहज ही दर्शन हर मानव के जीवन प्रबन्धन में उतर जायेगा।